# ***विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय***

***विषय-हिंदी*** ***दिनांक-29/06/2020***
***वर्ग-पंचम*** ***विषय-शिक्षिका—नीतू कुमारी***
***पाठ-8 (हमारे वृक्ष)***

---

***सुप्रभात बच्चों,***

***पिछली कक्षा में आपने हमारे वृक्ष कहानी का अध्ययन किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्ययन-सामग्री पूरे मनोयोग से पढ़े होंगे। आज की कक्षा में आपको उसके आगे का भाग पढ़ना है। जो कि इस प्रकार है। :—***

*पीपल भारतीय मूल वृक्ष है। इसे वनस्पति शास्त्र में 'फ़ाइकस रिलीज़ ओसा' कहते हैं। इसे बंगला में अश्वत्थो, गुजराती में जारी पीपल, तेलुगु में आशवथमु एवं बोधि, तमिल में आसु कन्नड़ में अराली, मलयालम में अरच्छु व अराचल कहते हैं। पीपल का वृक्ष विशाल आकार का होता है। इसका छत्र खुला और बिखरा होता है। इसकी शाखाएँ चारों ओर फैली होती हैं। यह पर्नपाती वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ चमकदार, चौड़ी जाली वाली तथा शिखा पर लम्बी व तीखी होती हैं। पीपल को सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। इसके बीजों को सामान्यतः ज़मीन में बोकर अथवा पौधशाला में सामान्य विधि। से पौधे तैयार कर वृक्षरोपन किया जा सकता है। टहनियों को काटकर भी इसे रोपा जा सकता है। पीपल का वृक्ष वन-क्षेत्र, खेत, जलाशय और धार्मिक स्थानों पर लगाया जाता है। यह तेज़ी से बढ़ता है तथा छायादार होता है। इसकी जड़ें पृथ्वी के समांतर फैलती हैं जो भूमि के कटाव को रोकती हैं। इसमें फूल और फल अप्रैल से जून के मध्य आते हैं। इसका फल छूटा तथा पकने पर कला अथवा बैंगनी रंग का होता है। सामान्यतः यह पक्षियों के खाने के काम आता है।*

---

***बच्चों, आज के लिए इतना ही, शेष अगली कक्षा में।***

---

## ***गृहकार्य :—***

***दी गयी अध्ययन-सामग्री को पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें तथा इनमे से कठिन शब्द चुनकर लिखें।***